aglasem.com

कक्षा १२ अर्थशास्त्र नोट्स

आय और रोज़गार का निर्धारण



Key Notes and Important Questions with Answers

इकाई-VII

आय और रोजगार का निर्धारण

स्मरणीय बिन्दु

- एक अर्थव्यवस्था के समस्त क्षेत्रों द्वारा एक दिए हुए आय स्तर पर एवं एक निश्चित समयावधि में समस्त अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के नियोजित क्रय के कुल मूल्य को समग्र मांग कहते हैं। एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं व सेवाओं की कुल मांग को समग्र मांग (AD) कहते हैं इसे कुल व्यय के रूप में मापा जाता है।
- समग्र मांग के मुख्य घटक निम्नलिखित हैं-
  - (i) उपभोग व्यय (c).
  - (ii) निवेश व्यय (I)
  - (iii) सरकारी व्यय (G).
  - (iv) शुद्ध निर्यात (X – M).

  इस प्रकार, AD = C + I + G + (X – M)

  दो क्षेत्र वाली अर्थव्यवस्था में AD = C + I.
- एक अर्थव्यवस्था की सभी उत्पादक इकाईयों द्वारा एक निश्चित समयावधि में सभी अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के नियोजित उत्पादन के कुल मूल्य को समग्र पूर्ति कहते हैं। समग्र पूर्ति के मौद्रिक मूल्य को ही राष्ट्रीय आय कहते हैं। अर्थात् राष्ट्रीय आय सदैव समग्र पूर्ति के समान होती है।

  AD = C + S
- समग्र पूर्ति देश के राष्ट्रीय आय को प्रदर्शित करती है।

  AS = Y (राष्ट्रीय आय)

- उपभोग फलन आय (Y) और उपभोग (C) के बीच फलनात्मक सम्बन्ध को दर्शाता है।

  $C = f(Y)$

  यहाँ C = उपभोग

  Y = आय

  f = फलनात्मक सम्बन्ध

  उपभोग फलन की समीकरण :

  $$C = \overline{C} + MPC \cdot Y$$

- **स्वायत्त उपभोग** ($\overline{C}$) : आय के शून्य स्तर पर जो उपभोग होता है उसे स्वायत्त उपभोग कहते हैं। जो आय में परिवर्तन होने पर भी परिवर्तित नहीं होता है, अर्थात् यह आय बेलोचदार होता है।
- **प्रत्याशित उपभोग :** राष्ट्रीय आय के मिश्रित स्तर पर नियोजित निवेश को कहते है।
- **प्रेरित उपभोग :** उस उपभोग स्तर से है जो प्रत्यक्ष रूप से आय पर निर्भर करता है।
- **उपभोग फलन :** उपभोग प्रवृत्ति दो प्रकार की होती है–

  (1) औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC)

  (2) सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC)

- **औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) :** औसत प्रवृत्ति को कुल उपभोग तथा कुल आय के बीच अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है।

  APC = कुल उपभोग (C) / कुल आय (Y)

APC के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण बिन्दु

(i) APC इकाई से अधिक रहता है जब तक उपभोग राष्ट्रीय आय से अधिक होता है। समविच्छेद बिन्दु से पहले, APC > 1.

(ii) APC = 1 समविच्छेद बिन्दु पर यह इकाई के बराबर होता है जब उपभोग और

आय बराबर होता है। C = Y

(iii) आय बढ़ने के कारण APC लगातार घटती है।

(iv) APC कभी भी शून्य नहीं हो सकती, क्योंकि आय के शून्य स्तर पर भी स्वायत्त उपभोग होता है।

- **सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) :** उपभोग में परिवर्तन तथा आय में परिवर्तन के अनुपात को, सीमांत उपभोग प्रवृत्ति कहते हैं।

$$MPC = \frac{\text{उपभोग में परिवर्तन}}{\text{आय में परिवर्तन}} = \frac{\Delta C}{\Delta Y}$$

- MPC का मान शून्य तथा एक के बीच में रहता है। लेकिन यदि सम्पूर्ण अतिरिक्त आय उपभोग हो जाती है तब $\Delta C = \Delta Y$, अत: MPC = 1. इसी प्रकार यदि सम्पूर्ण अतिरिक्त आय की बचत कर ली जाती है तो $\Delta C = 0$, अत: MPC = 0.

- **बचत फलन :** बचत और आय के फलनात्मक सम्बन्ध को दर्शाता है।

  S = f(Y)

  यहाँ S = बचत

  Y = आय

  f = फलनात्मक सम्बन्ध

- **बचत फलन का समीकरण :**

  $S = -\bar{S}_o + sY.$

  जहाँ s = MPS

- बचत प्रवृत्ति दो प्रकार की होती है :- APS तथा MPS

- **औसत बचत प्रवृत्ति (APS) :** कुल बचत तथा कुल आय के बीच अनुपात को APS कहते हैं।

$$APS = \frac{\text{बचत}}{\text{आय}} = \frac{S}{Y}$$

❑ **औसत बचत प्रवृत्ति APS की विशेषताएँ**

1. APS कभी भी इकाई या इकाई से अधिक नहीं हो सकती क्योंकि कभी भी बचत आय के बराबर तथा आय से अधिक नहीं हो सकती।
2. APS शून्य हो सकती है: समविच्छेद बिन्दु पर जब C = Y है तब S = 0.
3. APS ऋणात्मक या इकाई से कम हो सकता है। समविच्छेद बिन्दु से नीचे स्तर पर APS ऋणात्मक होती है। क्योंकि अर्थव्यवस्था में अबचत (Dissavings) होती है तथा C > Y.
4. APS आय के बढ़ने के साथ बढ़ती हैं

❑ **सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS) :** आय में परिवर्तन के फलस्वरूप बचत में परिवर्तन के अनुपात को सीमांत बचत प्रवृत्ति कहते हैं।

$$MPS = \frac{\text{बचत में परिवर्तन}}{\text{आय में परिवर्तन}} = \frac{\Delta S}{\Delta Y}$$

❑ MPS का मान शून्य तथा इकाई (एक) के बीच में रहता है। लेकिन यदि

(i) यदि सम्पूर्ण अतिरिक्त आय की बचत की ली जाती है, तब $\Delta S = \Delta Y$, अत: MPS = 1.

(ii) यदि सम्पूर्ण अतिरिक्त आय, उपभोग कर ली जाती है, तब $\Delta S = 0$, अत: MPS = 0.

❑ **औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) तथा औसत प्रवृत्ति (APS) में सम्बन्ध**

सदैव APC + APS = 1 यह सदैव ऐसा ही होता है, क्योंकि आय को या तो उपभोग किया जाता है या फिर आय की बचत की जाती है।

प्रमाण: $Y = C + S$

दोनों पक्षों का Y से भाग देने पर

$$\frac{Y}{Y} = \frac{C}{Y} + \frac{S}{Y}$$

$$1 = APC + APS$$

अथवा APC = 1 – APS या APS = 1 – APC। इस प्रकार APC तथा APS का योग हमेशा इकाई के बराबर होता है।

❑ **सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) तथा सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS) में सम्बन्ध**

सदैव MPC + MPS = 1; MPC हमेशा सकारात्मक होती है तथा 1 से कम होती है। इसलिए MPS भी सकारात्मक तथा 1 से कम होनी चाहिए। प्रमाण $\Delta Y = \Delta C + \Delta S$.

दोनों पक्षों को ΔY से भाग करने पर

$$\frac{\Delta Y}{\Delta Y} = \frac{\Delta C}{\Delta Y} + \frac{\Delta S}{\Delta Y}$$

1 = MPC + MPS अथवा

MPC = 1 – MPS अथवा

MPC = 1 – MPC

❑ एक अर्थव्यवस्था में एक वित्तीय वर्ष में पूँजीगत वस्तुओं के स्टॉक में वृद्धि को पूँजी निर्माण / निवेश कहते हैं।

(i) प्रेरित निवेश (ii) स्वतंत्र निवेश

❑ **प्रेरित निवेश :** प्रेरित निवेश वह निवेश है जो लाभ कमाने की भावना से प्रेरित होकर किया जाता है। प्रेरित निवेश का आय से सीधा सम्बन्ध होता है।

❑ **स्वतंत्र (स्वायत्त) निवेश :** स्वायत्त निवेश वह निवेश है जो आय के स्तर में परिवर्तन से प्रभावित नहीं होता अर्थात् आय निरपेक्ष होता है।

❑ **नियोजित बचत :** एक अर्थव्यवस्था के सभी गृहस्थ (बचतकर्त्ता) एक निश्चित समय अवधि में आय के विभिन्न स्तरों पर जितनी बचत करने की योजना बनाते हैं, नियोजित बचत कहलाती है।

❑ **नियोजित निवेश :** एक अर्थव्यवस्था के सभी निवेशकर्त्ता आय के विभिन्न स्तरों पर जितना निवेश करने की योजना बनाते हैं, नियोजित निवेश कहलाती है।

❑ **वास्तविक बचत :** अर्थव्यवस्था में दी गई अवधि के अंत में आय में से उपभोग व्यय घटाने के बाद, जो कुछ वास्तव में शेष बचता है, उसे वास्तविक बचत कहते हैं।

❑ **वास्तविक निवेश :** किसी अर्थव्यवस्था में एक वित्तीय वर्ष में किए गए कुल निवेश को वास्तविक निवेश कहा जाता है। इसका आंकलन अवधि के समाप्ति

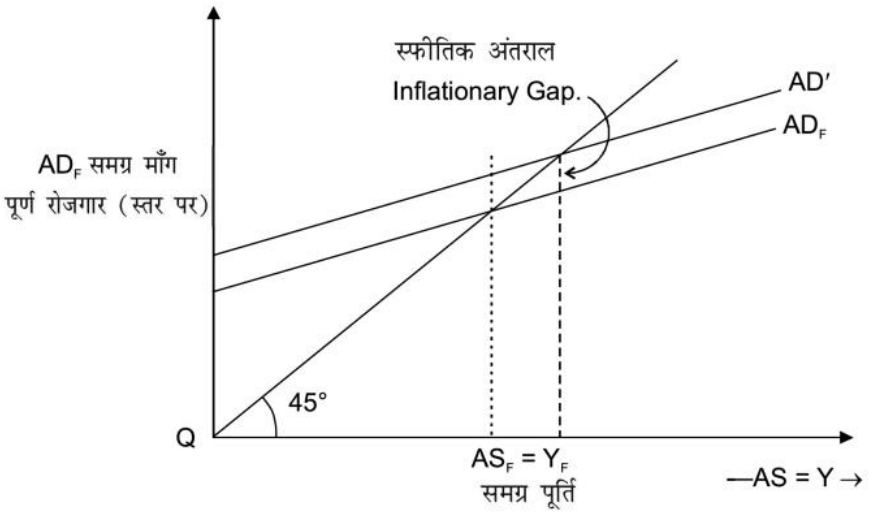
पर किया जाती है।

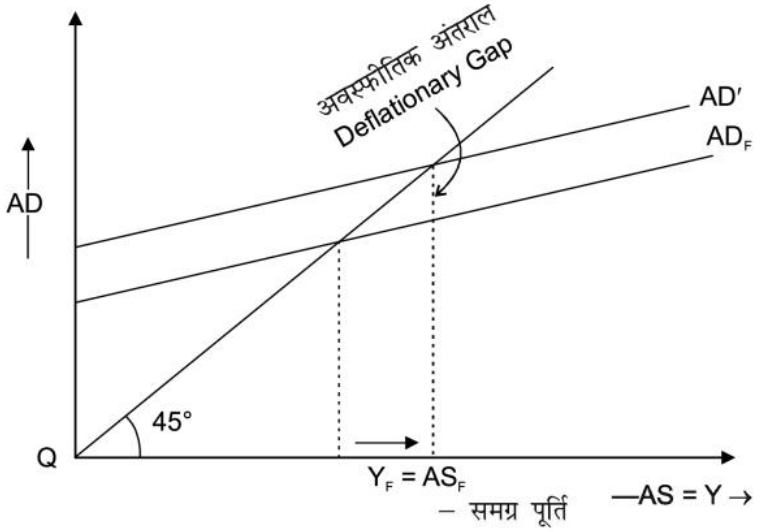
- **आय का संतुलन स्तर :** आय का वह स्तर है जहाँ समग्र माँग, उत्पादन के स्तर (समग्र पूर्ति) के बराबर होती है अत: AD = AS या S = I.
- **पूर्ण रोजगार :** इससे अभिप्राय अर्थव्यवस्था की ऐसी स्थिति से है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति जो योग्य है तथा प्रचलित मौद्रिक मजदूरी की दर पर काम करने को तैयार है, को रोजगार मिल जाता है।
- **ऐच्छिक बेरोजगारी :** ऐच्छिक बेरोजगारी से अभिप्राय: उस स्थिति से है, जिसमें बाजार में प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य उपलब्ध होने के बावजूद योग्य व्यक्ति कार्य करने को तैयार नहीं है।
- **अनैच्छिक बेरोजगारी :** अर्थव्यवस्था की ऐसी स्थिति है जहाँ कार्य करने के इच्छुक व योग्य व्यक्ति प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य करने के लिए इच्छुक है लेकिन उन्हें कार्य नहीं मिलता।
- **निवेश गुणक :** निवेश में परिवर्तन के फलस्वरूप आय में परिवर्तन के अनुपात को निवेश गुणक कहते हैं।

  $K = \frac{\Delta Y}{\Delta I}$ या गुणक $= \frac{\text{आय में परिवर्तन}}{\text{निवेश में परितर्वन}}$ अथवा $K = \frac{1}{1 - MPC}$

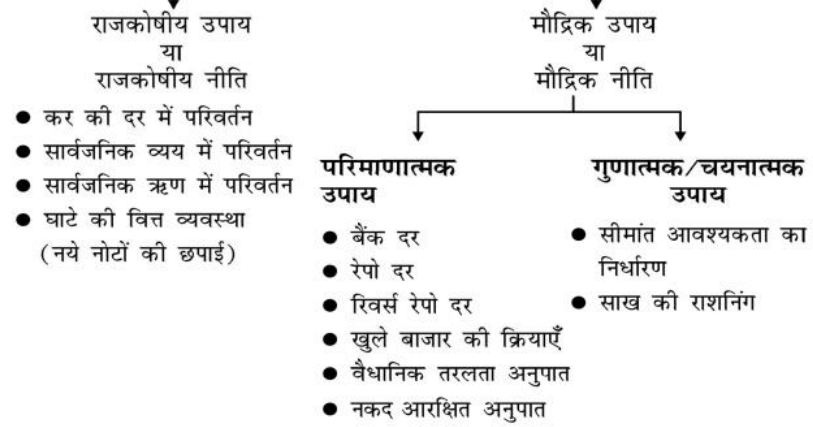
  अथवा $K = \frac{1}{MPS}$. इसका अधिकतम मान अनंत तथा न्यूनतम मान एक होता है।
- जब समग्र मांग (AD), पूर्ण रोजगार स्तर पर समग्र पूर्ति (AS) से अधिक हो जाए तो उसे अत्यधिक मांग कहते हैं।
- जब समग्र मांग (AD), पूर्ण रोजगार स्तर पर समग्र पूर्ति (AS) से कम होती है, उसे अभावी माँग कहते हैं।
- स्फीति अंतराल, वास्तविक समग्र मांग और पूर्ण रोजगार संतुलन को बनाए रखने के लिए आवश्यक समग्र मांग के बीच का अंतर होता है। यह समग्र मांग के आधिक्य का माप है। यह अर्थव्यवस्था में स्फीतिकारी प्रभाव उत्पन्न करता है।
- अवस्फीति अंतराल, वास्तविक समग्र मांग और पूर्ण रोजगार संतुलन को बनाए

रखने के आवश्यक समग्र मांग के बीच का अंतर होता है। यह समग्र मांग में कमी का माप है। यह अर्थव्यवस्था अवस्फीति (मंदी) उत्पन्न करता है।





अधिमांग (स्फीतिक अंतराल) तथा अभावी मांग (अवस्फीतिक अंतराल) के नियंत्रित करने की विधियाँ



परीक्षा उपयोगी प्रश्न व उत्तर
अति लघु उत्तर वाले प्रश्न
(1 अंक)

प्र. 1. समष्टि अर्थशास्त्र में 'समग्र आपूर्ति' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर. एक अर्थव्यवस्था की सभी उत्पादक इकाईयों द्वारा एक निश्चित समयावधि में सभी अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के नियोजित उत्पादन के कुल मूल्य को समग्र पूर्ति कहते हैं।

प्र. 2. सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति की परिभाषा दीजिए।

उत्तर. उपभोग में परिवर्तन तथा आय में परिवर्तन के अनुपात को, सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति कहते हैं।

प्र. 3. पूर्ण रोजगार का अर्थ बताइए।

उत्तर. इससे अभिप्राय अर्थव्यवस्था की ऐसी स्थिति से है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति जो योग्य है तथा प्रचलित मौद्रिक मजदूरी की दर पर काम करने को तैयार है, को रोजगार मिल जाता है।

प्र. 4. आरक्षित नगदी निधि (CRR) अनुपात की परिभाषा दीजिए।

उत्तर. CRR (आरक्षित नगदी) निधि वाणिज्यिक बैंकों की जमाओं का वह अनुपात है जो उन्हें केन्द्रीय बैंक के पास रखना होता है।

प्र. 5. रेपो दर की परिभाषा दीजिए।

उत्तर. केन्द्रीय बैंक जिस ब्याज दर वाणिज्यिक बैंकों को अल्पकालीन ऋण देते हैं, उसे रेपो दर कहते हैं।

प्र. 6. सीमांत उपभोग प्रवृत्ति का मूल्य एक से अधिक क्यों नहीं हो सकता?

उत्तर. क्योंकि उपभोग में परिवर्तन, आय में परिवर्तन से अधिक नहीं हो सकता।

प्र. 7. समविच्छेद बिंदु या समता बिंदु या समस्तर बिन्दु किसे कहते हैं?

उत्तर. समविच्छेद बिन्दु वहाँ प्राप्त होता है जहाँ बचत शून्य (S = 0) होती है तथा उपभोग(C) = आय (Y).

लघु उत्तरीय
3–4 अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. ऐच्छिक व अनैच्छिक बेरोजगारी के बीच अन्तर बताइए।

उत्तर. **ऐच्छिक बेरोजगारी :** यह बेरोजगारी का वह रूप है जिसमें योग्य व्यक्ति मजदूरी की प्रचलित दर पर रोजगार या कार्य उपलब्ध होने के बावजूद काम करने को तैयार नहीं है।

अनैच्छिक बेरोजगारी : यह बेरोजगारी का वह रूप है जहाँ योग्य व्यक्ति बाजार में प्रचलित मजदूरी दर पर काम करने के लिए तैयार है, लेकिन रोजगार नहीं मिलता है।

प्र. 2. एक अर्थव्यवस्था में सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC) 0.75 है। अर्थव्यवस्था में निवेश व्यय में रुपये 75 करोड़ की वृद्धि हाती है। राष्ट्रीय आय में कुल वृद्धि ज्ञात कीजिए।

उत्तर. $K = \frac{1}{1 - MPC} = \frac{1}{1 - 0.75}$

$K = 4$

$K = \frac{\Delta Y}{\Delta I}$

$4 = \frac{\Delta Y}{75}$

$\Delta Y = 4 \times 75 = 300$ Crore.

प्र. 3. एक अर्थव्यवस्था सन्तुलन में है। इसका उपभोग फलन = 300 + 0.8Y है तथा निवेश रु. 700 करोड़ हो तो राष्ट्रीय आय ज्ञात कीजिए।

उत्तर. $C = 300 + 0.8Y$

$Y = C + I$

$Y = 300 + 0.8Y + 700$

$0.2Y = 1000$

$Y = 5000$

राष्ट्रीय आय = Rs. 5000

Q. 4. कारण सहित बताइए कि निम्न कथन सत्य हैं या असत्य?

1. जब सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति शून्य है तो निवेश गुणक का मान भी शून्य होगा।
2. औसत बचत प्रवृत्ति का मान कभी भी शून्य से कम नहीं होता है।
3. जब MPC > MPS तो निवेश गुणक का मान 5 से अधिक होगा।
4. सीमान्त बचत प्रवृत्ति (MPS) का मान कभी भी ऋणात्मक नहीं होता है।
5. जब निवेश गुणक एक होता है तो सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC) शून्य होती है।
6. औसत बचत प्रवृत्ति का मान 1 से अधिक नहीं हो सकता है।

उत्तर. 1. असत्य, क्योंकि जब MPC = 0, K = 1/(1 – MPC) = 1/1 – 0 = 1,

अत: निवेश गुणक का मान एक होता है।

2. असत्य, क्योंकि जब अर्थव्यवस्था में बचतें ऋणात्मक हैं तो APS ऋणात्मक होती है।
3. कथन असत्य, क्योंकि K का मूल्य 5 से अधिक और कम हो सकता है।
4. सत्य, क्योंकि MPS = $\Delta S/\Delta Y$ होता है ओर आय में वृद्धि होने पर बचतों में कभी भी कमी नहीं हो सकता।
5. सत्य, क्योंकि K = 1/(1 – MPC) = 1/ (1 – 0) = 1.
6. सत्य, क्योंकि बचत, आय से अधिक नहीं हो सकती।

प्र. 5. निवेश गुणक तथा सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति में सम्बन्ध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर. K = 1/(1 – MPC), प्रदर्शित करता है कि MPC तथा निवेश गुणक में सीधा सम्बन्ध होता है। यदि बढ़ी हुई आय का अधिक भाग उपभोग पर व्यय किया जाएगा, तो निवेश गुणक का मान भी अधिक होगा। अर्थात् MPC का मान जितना अधिक होगा, गुणक का मान भी उतना ही अधिक होगा और विलोमश:। उदाहरण : MPC = 0.5, K = 2; MPC = 0.75, K = 4; MPC = 0.8, K = 5.

प्र. 6. एक अर्थव्यवस्था का बचत वक्र रु. 30 करोड़ का ऋणात्मक, अंत: खण्ड बनाता है और अतिरिक्त आय का 20% भाग बचाया जाता है। बचत तथा उपभोग फलन ज्ञात कीजिए।

Ans. $\overline{C}$ = 30 करोड़ रु.

MPS = 0.2

अत: बचत फलन / $S = -\overline{C} + (1 - b)\, y$

$= -30 + 0.2Y$

उपभोग फलन MPC = 1 – 0.2 = 0.8

$C = \overline{C} + by$

$C = 30 + 0.8Y$

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न
6 अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. अर्थव्यवस्था में 'अभावी मांग' दूर करने में निम्नलिखित की भूमिका समझाइए।

1. खुली बाजार कार्यवाही (क्रियाएँ)
2. बैंक दर

उत्तर. 1. केन्द्रीय बैंक द्वारा खुले बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय को खुले बाजार की क्रियाएँ कहते हैं।

अभावी मांग की स्थिति में केन्द्रीय बैंक प्रतिभूतियों को खरीदता है परिणाम स्वरूप उतने मूल्य की नकद राशि से वाणिज्य बैंक की ऋण देने की क्षमता बढ़ जाती है। अंतत: समग्र मांग बढ़ जाती है और अभावी मांग ठीक हो जाती है।

2. बैंक दर वह ब्याज की दर है जिस पर केन्द्रीय बैंक वाणिज्यिक बैंकों को दीर्घकालीन उधार देता है। अभावी मांग की स्थिति में केन्द्रीय बैंक, बैंक दर घटा देता है। इससे वाणिज्यिक बैंक ऋणों पर ब्याज दर घटाने को प्रोत्साहित होते हैं, फलस्वरूप लोग अधिक ऋण लेते हैं जिससे समग्र मांग बढ़ती है।

प्र. 2. अर्थव्यवस्था में 'मांग आधिक्य' करने में निम्नलिखित की भूमिका समझाइए।

1. बैंक दर 2. खुले बाजार की क्रियाएँ।

उत्तर. 1. मांग आधिक्य की स्थिति ठीक करने के लिए केन्द्रीय बैंक, बैंक दर बढ़ा देता है, जिससे वाणिज्यिक बैंक जिस दर पर ऋण देते हैं उसे बढ़ाने को मजबूर होते हैं। फलस्वरूप लोग कम ऋण लेते हैं और समग्र मांग घटती है।

2. जब मांग आधिक्य की स्थिति होती है तो केन्द्रीय बैंक सरकारी प्रतिभूतियों को बेचता है। ऐसी स्थिति में वाणिज्यिक बैंकों से मुद्रा केन्द्रीय बैंक के पास चली जाती है। इससे बैंकों की जमाएँ कम हो जाती हैं और ऋण देने का सामर्थ्य कम हो जाता हैं। कम ऋण दिया जाता है इससे समग्र मांग घटती है।

प्र. 3. एक अर्थव्यवस्था में अस्फीतिकारी अंतराल दूर करने में निम्नलिखित की भूमिका समझाइए।

1. सार्वजनिक व्यय 2. वैद्य आरक्षित अनुपात (LRR)

उत्तर. 1. अस्फीतिकारी अन्तराल अथवा अभावी मांग की स्थिति में सरकार को सार्वजनिक खर्च में वृद्धि करनी चाहिए जैसे भवन निर्माण, पुलों व सड़कों का निर्माण आदि। इससे रोजगार के स्तर में वृद्धि होगी। फलस्वरूप आय में वृद्धि होगी और अंततः क्रय शक्ति में वृद्धि होगी और समग्र मांग बढ़ेगी।

2. वैद्य आरक्षित अनुपात से अभिप्राय जमाओं के एक न्यूनतम प्रतिशत से है जिसे व्यापारिक बैंक अनिवार्य रूप से नकदी के रूप में केन्द्रीय बैंक के पास या अपने पास रिजर्व रखते हैं। अस्फीतिकारी अन्तराल की स्थिति में केन्द्रीय बैंक LRR कम कर देता है। फलस्वरूप बैंकों द्वारा ऋण देने के लिए कोष की उपलब्धता बढ़ जाती है। और समग्र मांग बढ़ती है।

प्र. 4. अस्फीतिकारी अन्तराल दूर करने में सीमान्त आवश्यकता का क्या योगदान है? वर्णन कीजिए।

उत्तर. सीमान्त आवश्यकता से अभिप्राय ऋणी द्वारा जमानत का मार्जिन या सीमा है। जब मार्जिन कम होता है तो उधार लेने की सीमा बढ़ जाती है। अवस्फीतिकारी अन्तर दूर करने के लिए केन्द्रीय बैंक मार्जिन कम कर देता है जिससे ऋणी की उधार की क्षमता बढ़ जाती है व समग्र मांग में भी वृद्धि हो जाती है।

प्र. 5. एक अर्थव्यवस्था में बढ़ी हुई आय का 75% उपभोग पर व्यय किया जाता है। यदि निवेश में वृद्धि रु. 1000 हो तो ज्ञात करो-

1. आय में कुल वृद्धि
2. उपभोग व्यय में कुल वृद्धि

उत्तर. MPC = 75% = 75/100 अर्थात् 3/4.

MPS = 1 – 3/4 = 1/4 K = 1/MPS = 1/¼ = 4

1. $\Delta Y = \Delta I \times K$

   $\Delta Y = 1000 \times 4$

   = 4000 रूपये

2. $Y = C + I$

   $C = Y - I$

   = 4000 – 1000

   = 3000 रूपये

प्र. 6. एक अर्थव्यवस्था में आय का संतुलन स्तर 12000 करोड़ रू. है। सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति तथा सीमान्त बचत प्रवृत्तियों का अनुपात 3:1 है। अर्थव्यवस्था के नए संतुलन स्तर 20000 करोड़ रु. के लिए कितने अतिरिक्त निवेश की आवश्यकता होगी?

उत्तर. दिया है Y = 12000 करोड़ रु.

MPC : MPS = 3 : 1

$MPC = \frac{3}{4}, MPS = \frac{1}{4}$

$\Delta I = ?$

नई सन्तुलन आय = 20000 करोड़ रु.

ΔY = 20000 – 12000 = 8000 Crores रु.

K = 1/MPS = 4

$K = \Delta Y/\Delta I$; $4 = 8000 / \Delta I$

ΔI = 8000/4 = 2000 करोड़ रु.

प्र. 7. रेपो दर और बैंक दर में अन्तर दीजिए।

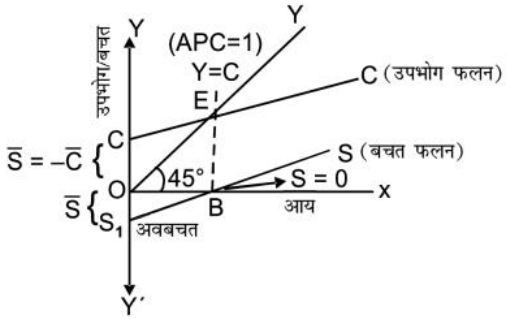
उत्तर. रेपो दर और बैंक दर दोनों का अर्थ है, वह दर जिस पर केन्द्रीय बैंक

वाणिज्यिक बैंकों को ऋण देता है। लेकिन रेपो दर का सम्बन्ध अल्पकालीन ऋणों से होता है और इस पर अल्पकालीन ब्याज दर लागू होती है, जबकि बैंक दर का सम्बन्ध दीर्घकालीन ऋणों से होता है और इस पर दीर्घकालीन ब्याज दर लागू होती है।

प्र. 8. दिए बचत वक्र से उपभोग वक्र प्राप्त करने में, लिए जाने वाले चरण लिखिए। रेखाचित्र का प्रयोग करें।

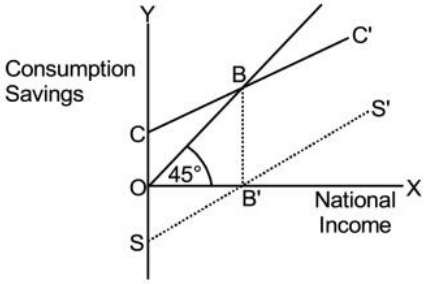
उत्तर. दिए बचत वक्र दिया गया है। इस वक्र के आधार पर उपभोग फलन प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित चरण हैं।

1. सर्वप्रथम मूल बिन्दु से गुजरती हुई 45° रेखा का निर्माण कीजिए।
2. फिर Y अक्ष के धनात्मक भाग पर OS_1 के बराबर OC लीजिए जोकि उपभोग वक्र का प्रारम्भिक बिन्दु है।
3. x-अक्ष पर, B बिन्दु शून्य बचत को दर्शाता है। इस बिन्दु से एक लम्ब खींचिए, जो 45° रेखा को E बिन्दु पर काटे। इस बिन्दु पर C = Y है। इस प्रकार E बिन्दु उपभोग वक्र पर स्थित दूसरा बिन्दु प्राप्त हो जाता है।
4. अंत में, C और E बिन्दु को मिलाते हुए इसे आगे तक ले जाइए। इस प्रकार, CC वांछित उपभोग वक्र प्राप्त हो जाएगा।



प्र. 9. उपभोग वक्र से बचत वक्र प्राप्त करने में लिए जाने वाले चरण लिखिए। रेखाचित्र का प्रयोग कीजिए।

उत्तर.



1. CC' उपभोग वक्र है
2. OC के बराबर OS लो
3. OX अक्ष पर 0 बिन्दु से 45° की रेखा खींचों जो CC' को बिन्दु B पर काटती है।
4. B बिन्दु से OX पर एक लम्ब खींचो जो OX को B' पर काटता है।
5. S और B' को मिलाते हुए एक रेखा SS' खींचों
6. SS' बचत वक्र है।

आंकिक अभ्यास

1. यदि प्रयोज्य आय 2000 रूपये तथा उपभोग व्यय 1500 रूपये हैं, तो औसत बचत प्रवृत्ति तथा औसत उपभोग प्रवृत्ति ज्ञात कीजिए।
2. यदि व्यय योग्य आय 1000 रूपये तथा उपभोग व्यय 750 रूपये हैं तो औसत बचत प्रवृत्ति तथा औसत उपभोग प्रवृत्ति ज्ञात कीजिए।
3. यदि MPS = MPC, तो गुणक (K) का मान ज्ञात कीजिए तथा K का अधिकतम तथा न्यूनतम मान लिखो।
4. यदि MPC का मान 0.9 है तो MPS का मान ज्ञात कीजिए।
5. निम्नलिखित आंकड़ों से APS व MPC के मानों की गणना कीजिए।

आय	उपभोग	MPC	APS
0	40	–	–
100	120	–	–

200	200	–	–
300	280	–	–
400	360	–	–

6. सारणी को पूरा कीजिए–

आय (रु. 000) :	MPC	बचत	APS
0	–	–	–
100	0.6	–	–
200	0.6	–	–
300	0.6	–	–

7. एक अर्थव्यवस्था में बचत फलन S = – 50 + 0.5Y (जहाँ S = बचत और Y = राष्ट्रीय आय) और निवेश व्यय 700 है। इससे निम्नलिखित का परिकलन कीजिए।

(i) राष्ट्रीय आय का संतुलन स्तर

(ii) राष्ट्रीय आय के संतुलन स्तर पर उपयोग व्यय

$$S = -50 + 0.5Y$$

$$I = 700$$

(i) संतुलन स्तर पर

$$AD = AS$$

$$I = S$$

$$700 = -50 + 0.5Y$$

$$0.5\,Y = 750$$

$$Y = \frac{750}{0.5} = 1500$$

(ii) $Y = C + S$

$C = Y - S$ (I = S)

$= 1500 - 700 = 800$

8. C = 100+ 0.75Y है। (जहाँ C = उपभोग व्यय तथा Y = राष्ट्रीय आय) और निवेश व्यय 800 है। इस सूचना के आधार पर निम्नलिखित का परिकलन कीजिए–

(i) राष्ट्रीय आय का संतुलन स्तर

(ii) राष्ट्रीय आय के संतुलित स्तर पर बचत।

उत्तर–

$$Y = C + S$$

$$= (I = S)$$

$$Y = 100 + 0.75Y + 800$$

$$0.05Y = 900$$

$$Y = 3600$$

$$S = 800$$

9. एक अर्थव्यवस्था में निम्न उपभोग फलन दिया गया है–

$C = 100 + 0.5\ Y$

एक संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से दिखाइए कि इस अर्थव्यवस्था में जब आय में वृद्धि होती है तो APC में कमी होती है।

उत्तर–

Y (आय)	C (उपभोग)	$APC = \frac{C}{Y}$	
100	150	1.5	
200	200	1	APC उत्तरोत्तर
300	250	0.8	गिर रही है
400	300	0.75	

10. यदि अर्थव्यवस्था में MPC = 0.8 है तो निम्नलिखित सारिणी को पूरा कीजिए–

आय (रु.) (Y)	उपभोग (रु.) (C)	बचत (रु.) (S)	निवेश (रु.) (I)	AD (रु)	AS (रु)
0		–60	40		
100			40		
200			40		
300			40		
400			40		
500			40		
600			40		
700			40		

11. यदि एक अर्थव्यवस्था में उपभोग फलन C= 75 + 0.9Y तथा निवेश व्यय रु. 400 करोड़ है तो गणना कीजिए।

(अ) आय का संतुलन सतर

(ब) आय के संतुलन स्तर पर बचत।

3-4 अंक वाले आंकिक प्रश्नों के हल

1. $APC = \frac{1500}{2000} = 0.75$

APS = 1 – APC = 0.25

2. $APC = \frac{750}{1000} = 0.75$

APS = 1 – APC = 0.25

3. K = 2, K का अधिकतम मान अनंत तथा न्यूनतम मान एक होता है।

4. MPS = 1 – MPC = 1 – 0.9 = 0.1

5.

आय *(Rs. 1000)*	उपभोग *(Rs. 1000)*	*MPC (DC/DY)*	*APS (S/Y)*
0	40	–	–
100	120	–0.2	0.8
200	200	0	0.8
300	280	0.067	0.8
400	360	0.1	0.8

6.

Income	*MPC*	*Savings*	*APS*
0	–	–90	–
100	0.6	–50	–0.5
200	0.6	–10	–0.05
300	0.6	–30	0.1

6 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

उत्तर: 10

आय (Y)	*उपभोग (C)*	*बचत (S)*	*निवेश (I)*	*AD (C+1)*	*AS (C+S)*
0	60	–60	40	100	0
100	140	–40	40	180	100
200	220	–20	40	260	200
300	300	0	40	340	300
400	380	20	40	420	400
500	460	40	40	500	500
600	540	60	40	580	600
700	620	80	40	660	700

उत्तर:11. (अ) AD = C + I

AD = 75 + 0.9Y + 400

AD = 475 + 0.9Y

संतुलन में

AS = AD

Y = 475 + 0.9Y

0.1Y = 475

Y = 4750 रूपये

(ब) $C = 75 + 0.9Y$

$= 0.75 + 0.9\ (4750)$

$= 75 + 4275$

= 4350 रूपये।

$S = Y - C$

$= 4750 - 4350 = 400$

S = 400 करोड़